

सुनैना मैया लाई हूं आज वाधाई ॥
साकेत स्वामिनि तेरे घर पृगटी श्री सीय नाम धराई
कोटि जन्म की फली तपस्या मातु भई मन भाई ॥
उमा रमा शची सावित्री करे चरण कमल सेवकाई
जगदम्बा जग जननी मैया बालरूप में आई ॥
जांकी पद नख चंद्र छटा जग ब्रम्ह ज्याति कहलाई
चारों वेद जांको भेद न पावें सो तुम गोद खिलाई ॥
प्रेम सुधा की सार मनोहर मूरति है दरसाई
भाग मई मिथिला की भूमी कीरति सब जग छाई ॥
गुणनि आगरि रूप उजागरि सुख सागर सरसाई
विधि हरि हर वंदत पद रेणू शारदा थाह न पाई ॥
यांको नाम जगत मंगल है यह स्वामिनि सुखदाई
मिथिलेश्वर के आंगन खेले शील सुधा वर्षाई ॥
नर नारी मिथिला के मिलकर गावत मंगल वाधाई
वारि वारि पीवत है छिन छिन रूप निरखि हर्षाई ॥

स्वामिनि पद नूपुर पिंजर में कोकिल रूप बनाई
निमिख निमिख में देत अशीशें गरीबि श्री खण्ड बलिजाई ॥